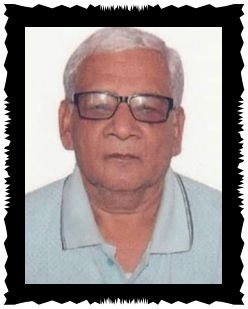

रमेशराज

मन करता है

पर्वत-पर्वत बर्फ जमी हो
जिस पर फिसल रहे हों,
फूलों की घाटी हो कोई
उसमें टहल रहे हों,
ऐसे कुछ सपनों में खोएं,
मन करता है।

मन के बीच नदी हो कोई
कलकल, कलकल बहती,
अपनी मृदुभाषा में हमसे,
ढेरों बातें कहती,
हमको उसके शब्द भिगोएं,
मन करता है।

टहनी-टहनी फूल खिले हों
पात-पात मुस्काएं,
फुनगी-फुनगी चिंहुक-चिंहुककर
चिडिया गीत सुनाएं,
हम वसंत के सपने बोएं,
मन करता है।

मुन्नूजी

दो-दो गुल्लक
भरकर मुँह तक
पैसे रखते मुन्नूजी ।

नाक सिकोंडें
मुँह को मोड़ें
जब-जब चिढ़ते मुन्नूजी।

नर्म पकौड़ी
गर्म कचौड़ी
जी-भर चखते मुन्नूजी।

झट मुस्कायें
झट रो जायें
नाटक रचते मुन्नूजी।

फुदक फुदककर
मेंढक बनकर
सीढ़ी चढ़ते मुन्नू जी।

 ISSN:2583-8849